REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 10 | ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2021

# बौद्धधर्म और पाँच मुद्राएँ

डॉ. उदय पासवान
विभागाध्यक्ष–सह–एसोसिएट प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग,
एस०एन० सिन्हा कॉलेज, टेकारी, गया, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया।

## परिचयः

छठी शताब्दी ई.पू. इतिहास में एक अद्भुत शताब्दी मानी जाती है। इस सदी में बुद्ध, महावीर, हेराक्लिटस, जरथुस्त्र, कन्फ्यूशियस और लाओत्से जैसे महान विचारक रहे और उन्होंने अपने विचारों का प्रचार किया। उनमें सबसे सफल जैनधर्म और बौद्धधर्म थे जिनका भारतीय समाज पर प्रभाव उल्लेखनीय था। एक बुद्ध प्रतिमा में विभिन्न आसनों के साथ संयुक्त कई सामान्य मुद्राएँ हो सकती हैं। मुद्रा संचार और आत्म–अभिव्यक्ति का एक गैर–मौखिक तरीका है, जिसमें हाथ के इशारों और उंगलियों के आसन शामिल हैं।

इन मुद्राओं के महत्व का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि पाँच पार लौकिक (ध्यानी) बुद्धों में से प्रत्येक कोइन में से एक मुद्रा सौंपी गई है, और उन्हें दृश्य कला में हमेशा इसी मुद्रा के साथ चित्रित किया जाता है।

मूल रूप से मुद्रा एक संस्कृत शब्द है जिसका उपयोग हाथ या हाथों की स्थिति के लिए विभिन्न संदेशों को व्यक्त करनेवाले कुछ अनुष्ठान इशारों को दर्शाने के लिए किया जाता है, हालांकि, कुछ मुर्दों में पूरे शरीर को शामिल किया जाता है। मुद्रा शब्द दो शब्दों ''कीचड़'' से बना है और ''रा'' का अर्थ है आनन्दित होना या खुश होना और देना, इस प्रकार वह क्रिया है जो आनंद या चरम आनंद प्रदान करती है। यह एक संकेत है कि मुद्रा का अभ्यास संवेदी पहलू से संबंधित है। मुद्रा के अन्य अर्थ ''मुहर'' और ''निशान'' हैं। प्रतीकात्मक इशारों का उपयोग हिंदू, बौद्ध और जैन आइकनोग्राफी, भारतीय शास्त्रीय नृत्य, योग अभ्यास और सांकेतिक भाषा में किया जाता है।

**खोजशब्दः** मुद्रा, चरकारा, संस्कृत, मंत्र शास्त्र, उपासना शास्त्र, नृत्य शास्त्र, ज्ञानमुद्रा, पंजा और पंजतान।

## बौद्धधर्म से संबंधित मुख्य पहलू–

- बौद्ध धर्म से संबंधित मुख्य पहलू
- बुद्ध को शाक्य मुनिया तथागत भी कहा जाता है। उन्हें बौद्धधर्म का संस्थापक माना जाता है। उनका जन्मसिद्धार्थ के रूप में शाक्य गणराज्य के शासक शुद्धोधन और उनकी पत्नी माया के यहाँ वैशाख पूर्णिमा को कपिलवस्तु के पास लुम्बिनी उद्यान में छठी शताब्दी ईसा पूर्व में हुआ था।

- सिद्धार्थ ने यशोधरा से विवाह किया और उनका एक पुत्र राहुला था। उनके ऐश्वर्य पूर्ण जीवन ने उन्हें असंतुष्ट छोड़ दिया और वे बीमारी, बुढ़ापा और मृत्यु के संकेतों से परेशान थे जो उन्होंने सांसारिक जीवन में देखे थे।
- 29 साल की उम्र में, उन्होंने शांति की तलाश में और दुनिया की बुराइयों को समझने के लिए महल छोड़ने का फैसला किया।
- 35 वर्ष की आयु में, फिर से वैशाख पूर्णिमा पर, उन्होंने उस स्थान पर ज्ञान प्राप्त किया जिसे अब बोधगया के नाम से जाना जाता है। उन्होंने अपना पहला उपदेश अपने पहले शिष्यों के सामने सारनाथ के एक हिरण पार्क में दिया था।
- बुद्ध ने कुसीनारा में महापरिनिर्वाण प्राप्त किया।

## बौद्ध धर्म से जुड़ी शिक्षाएँ:

- जीवन की चरम सीमा से बचने के लिए, चाहे वह सांसारिक सुखों की लत हो या दर्दनाक तपस्या और आत्म–वैराग्य का जीवन।
- बौद्धधर्म आध्यात्मिक विवादों से स्वयं को सरोकार नहीं रखता है।
- बुद्ध ने नैतिक प्रगति पर जोर दिया जो ब्रह्मांड के किसी भी निर्माता से स्वतंत्र था।
- बौद्धधर्म का सार इस बोध में निहित है कि जीवन क्षणभंगुर है।
- ऐसा लगता है कि बुद्ध ने देहांतरण के विचार को स्वीकार कर लिया है।
- बौद्धधर्म के चार आर्य सत्य हैं: वे दुख का सत्य हैं, दुख के कारण का सत्य है, दुख के अंत का सत्य है, और उस मार्ग का सत्य है जो दुख के अंत की ओर ले जाता है।
- निर्वाण या पीड़ा की समाप्ति का मार्ग नोबल आठ गुना पथ है– सही समझ (सम्मादित्ती), सही विचार (सममासंकप्पा), सही भाषण (सम्मावाचा), सही क्रिया (सम्माकामंता), सही आजीविका (सममाअजिवा), सही प्रयास (सम्मावायमा), सही दिमाग (सम्मासती) और सही एकाग्रता (सम्मासमाधि)

## बौद्ध धर्म के स्कूल:

हिनायान

- इसका अर्थ है 'कम रास्ता'
- वे बुद्ध की शिक्षाओं के प्रति सच्चे हैं।
- इसके ग्रंथ पाली में हैं।
- मूर्ति पूजा में विश्वास नहीं करता
- ओ आत्म–अनुशासन और ध्यान के माध्यम से मुक्ति
- इसे अशोक द्वारा संरक्षण प्राप्त था।

## महायान:

- इसका अर्थ है 'बड़ापथ'
- महायान के दो मुख्य दार्शनिक स्कूल हैं – माध्यमिक और योगाचार।
- इसके ग्रंथ संस्कृत में हैं।
- यह बुद्ध को भगवान मानता है और बुद्धों और बोधिसत्वों की मूर्तियो ंकी पूजा करता है।
- बुद्ध की स्मृति में विश्वास और भक्ति के माध्यम से मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है। यह मंत्रों में विश्वास करता है।

### वज्रयानः

- इसका अर्थ है ''वज्र का वाहन''।
- 11वीं सीई में तिब्बत में स्थापित।
- यह माना जाता है कि वज्र नामक जादुई शक्तियों को प्राप्त करके मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है।
- लामा नामक गुरु की भूमिका को बहुत महत्त्व दिया जाता है जिसने दार्शनिक और अनुष्ठान परंपराओं में महारत हासिल की है। लामाओं का एक लंबा वंश है। दलाई लामा एक प्रसिद्ध तिब्बती लामा हैं।

## जैनधर्म और बौद्धधर्म के बीच समानताएँ और अंतर–

### समानताएँः–

- दोनों के पास आर्य संस्कृति की पृष्ठभूमि थी और तपस्वी आदर्शों और उपनिषदों के दर्शन, विशेष रूप से सांख्य–योग के दर्शन से प्रेरित थे।
- दोनों ही अपने युग की बौद्धिक, आध्यात्मिक और सामाजिक शक्तियों के उत्पाद थे और इसलिए दोनों प्रचलित ब्राह्मणवादी धर्म के खिलाफ विद्रोह के रूप में खड़े हुए।
- दोनों का उदय पूर्वी भारत मे हुआ जिसने उस समय तक पूर्व–आर्य संस्कृति की कुछ विशेषताओं को सफलतापूर्वक बरकरार रखा था।
- दोनों को क्षत्रिय जाति के सदस्यों द्वारा शुरू किया गया था और दोनों ने सामाजिक रूप से पद दलित लोगों से अपील की, वैश्य जिन्हें उनकी बढ़ती आर्थिक शक्ति के अनुरूप सामाजिक दर्जा नहीं दिया गया था, और सुद्र जिन्हें निश्चित रूप से उत्पीड़ित किया गया था।
- जैनधर्म और बौद्धधर्म के संस्थापक महावीर और बुद्ध दोनों क्रमशः क्षत्रिय राजकुमार थे और समकालीन शासक वर्ग, विभिन्न क्षत्रिय शासको और आर्थिक रूप से समृद्ध वैश्यों से अपने कारण के लिए समर्थन प्राप्त करने में सक्षम थे।
- हालांकि दोनों ने जाति व्यवस्था पर हमला नहीं किया, लेकिन वे इसके विरोध में थे और इसलिए, समाज के निचले तबके से बड़े धर्मांतरित लोगों को आकर्षित किया।
- दोनों ने कर्मकांड और ब्राह्मणवाद के बलिदान का विरोध किया और ब्राह्मणों के वर्चस्व को भी चुनौती दी।
- दोनों का मानना था कि निर्वाणया किसी व्यक्ति के उद्धार का मतलब जन्म और मृत्यु की शाश्वत श्रृंखला से उसका उद्धार है।
- दोनों ने एक अचूक अधिकार के रूप में वेदों की प्रामाणिकता से इनकार किया।
- दोनों ने मोक्ष प्राप्त करने के साधन के रूप में अनुष्ठान या यहाँ तक कि भक्ति और भगवान की पूजा के अभ्यास के बजाय एक शुद्ध और नैतिक जीवन पर अधिक बल दिया।

### मतभेदः

- जैनधर्म बौद्धधर्म की तुलना में कहीं अधिक प्राचीन धर्म है। जैन परंपराओं के अनुसार इसके चौबीस तीर्थंकर थे और महावीर उनमें से अंतिम थे।
- आत्मा की जैन अवधारणा बौद्धधर्म से भिन्न है। जैनधर्म का मानना है कि प्रकृति में मौजूद हर चीज, यहाँ तक कि पत्थर और पानी की भी अपनी एक आत्मा होती है। बौद्धधर्म ऐसा नहीं मानता।
- जैनधर्म की तुलना में बौद्धधर्म में अहिंसा (अहिंसा) की अवधारणा अलग है। जबकि जैनधर्म ने इसपर बहुत जोर दिया, बौद्धधर्म विदेशों में अपनी व्याख्या में उदार रहा, और यहाँ तक कि जहाँ यह लोगों की आवश्यकता या पारंपरिक आहार था, वहां पशु मांस खाने की अनुमति दी।
- जैनधर्म की तुलना में बौद्धधर्म ने जातिभेद के उन्मूलन पर अधिक बल दिया।
- जैनधर्म ने मोक्ष प्राप्त करने के लिए सख्त तपस्या करने की सलाह दी, जबकि बौद्धधर्म ने अपने उपासकों को मध्यम मार्ग या तथागत मार्ग का पालन करने की सलाह दी।

- जैनधर्म के अनुसार स्त्री और पुरुष गृहस्थ मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकते जबकि बौद्धधर्म के अनुसार यह दोनों के लिए संभव हैं।
- जैनधर्म के दिगंबर संप्रदाय में, भिक्षुओं के लिए नग्न होना आवश्यक है, जबकि बौद्धधर्म ने इसकी निंदा की।
- जैनधर्म की तुलना में बौद्धधर्म ने संघ के संगठन पर अधिक बल दिया।
- जैन धर्म के अनुसार, मृत्यु के बाद ही मोक्ष संभव है जबकि बौद्धधर्म के अनुसार यह स्वयं के जीवन के दौरान संभव है यदि कोई स्वयं को सांसारिक अस्तित्व से पूरी तरह से अलग करने में सक्षम है। इस प्रकार, जबकि जैनधर्म निर्वाण को शरीर से मुक्ति के रूप में वर्णित करता है। बौद्ध धर्म इसे स्वयं के विनाश या सांसारिक अस्तित्व से अलग होने के रूप में वर्णित करता है।
- जैनधर्म की तुलना में बौद्धधर्म परिस्थितियों के प्रति अधिक अनुकूल साबित हुआ। यही कारण है कि बौद्धधर्म पूरे एशिया में फैल गया और स्थानीय आबादी की परंपराओं को समायोजित किया या जैनधर्म केवल भारत तक ही सीमित रहा।

## बौद्धधर्म और बोधिसत्वः

- बौद्धधर्म में, एक बोधिसत्व वह व्यक्ति है जो बुद्धत्व की ओर अग्रसर है।
- प्रारंभिक बौद्ध विद्यालयों के साथ–साथ आधुनिक थे। बौद्धधर्म में, एक बोधिसत्व उस व्यक्ति को संदर्भित करता है जिसने बुद्ध बनने का संकल्प लिया है और एक जीवित बुद्ध से पुष्टि या भविष्यवाणी भी प्राप्त की है कि ऐसा होगा।
- महायान बौद्धधर्म में, बोधिसत्व का अर्थ किसी ऐसे व्यक्ति से है जिसने बोधिचित्त उत्पन्न किया हो, सभी संवेदनशील प्राणियों के लाभ के लिए बुद्धत्व प्राप्त करने के लिए एक सहज इच्छा और दयालुचित्त।
- परिणामस्वरूप, ब्रह्मांड संभावित बुद्धों की एक विस्तृत श्रृंखला से भर गया है या बुद्धत्व के मार्ग पर अभी–अभी निकले लोगों से लेकर उनलोगों तक जिन्होंने प्रशिक्षण में जीवन बिताया है और इस तरह अलौकिक शक्तियाँ प्राप्त की हैं। ये ''आकाशीय'' बोधिसत्व अपनी बुद्धि, करुणा और शक्तियों में कार्यात्मक रूप से बुद्ध के समकक्ष हैं।
- सर्व–बौद्ध बोधिसत्वों में मैत्रेय शामिल हैं, जो इस दुनिया में अगले बुद्ध के रूप में शाक्य मुनि के उत्तराधिकारी होंगे, और अवलोकितेश्वर, जिन्हें तिब्बत में स्पायनरासजिग्स (चेनरेजी) के रूप में जाना जाता है, चीन में गुआनिन (कुआन–यिन) और जापान में कन्नन के रूप में जाना जाता है।
- हालांकि सभी बोधि सत्व करुणामय ढंग से कार्य करते हैं, अवलोकितेश्वर को करुणा के अमूर्त सिद्धांत का अवतार माना जाता है। अधिक स्थानीय महत्त्व के बोधिसत्वों में तिब्बत में तारा और जापान में जिजो शामिल हैं।

## बौद्धधर्म में मुद्राएँः

मुद्रा संचार और आत्म–अभिव्यक्ति का एक गैर–मौखिक तरीका है, जिसमें हाथ के इशारों और उंगलियों के आसन शामिल हैं। वे प्रतीकात्मक संकेत आधारित अंगुलियों के पैटर्न हैं जो जगह ले रहे हैं, लेकिन बोले गए शब्द की प्रभावकारिता को बनाए रखते हैं, और दिव्य शक्तियों या स्वयं देवताओं के प्रतीक विचारों को मन में जगाने के लिए उपयोग किए जाते हैं।

उनका उपयोग भिक्षुओं द्वारा अनुष्ठान ध्यान और एकाग्रता के अपने आध्यात्मिक अभ्यासों में भी किया जाता है, और माना जाता है कि वे देवता को आह्वान करनेवाली शक्तियों को उत्पन्न करते हैं।

जबकि बड़ी संख्या में गूढ़ मुद्राएं हैं, समय के साथ बौद्ध कला ने उनमें से केवल पाँच को बुद्ध के प्रतिनिधित्व के लिए रखा है। बुद्ध की छवियाँ जो इनके अलावा अन्य मुद्राएं प्रदर्शित करती हैं अत्यंत दुर्लभ हैं।

## ये पाँच मुद्राएं हैं:

- धर्मचक्र मुद्रा
- संस्कृत में धर्मचक्र का अर्थ है 'धर्म का पहिया'
- यह मुद्रा बुद्ध के जीवन के सबसे महत्त्वपूर्ण क्षणों में से एक का प्रतीक है, वह अवसर जब उन्होंने सारनाथ केडियर पार्क मे ज्ञान प्राप्ति के बाद अपने साथियों को पहला उपदेश दिया।
- यह इस प्रकार धर्म के शिक्षण के चक्र की गति में सेटिंग को दर्शाता है।
- इस मुद्रा में दोनों हाथों के अंगूठे और तर्जनी एक वृत्त बनाने के लिए उनके सिरों को छूते हैं। यह वृत्त धर्मचक्र, या आध्यात्मिक शब्दों में, विधि और ज्ञान के मिलन का प्रतिनिधित्व करता है।
- दोनों हाथों की शेष तीन अंगुलियाँ फैली हुई रहती हैं। ये उँगलियाँ स्वयं प्रतीकात्मक महत्त्व से समृद्ध हैं– मध्यमा अंगुली शिक्षाओं के 'श्रोताओं' का प्रतिनिधित्व करती है, अनामिका 'एकान्तबोध' का प्रतिनिधित्व करती है, छोटी उंगली महा या नया 'महानवाहन' का प्रतिनिधित्व करती है।
- बाएं हाथ की तीन विस्तारित उंगलियां बौद्धधर्म के तीन रत्नों, अर्थात्बुद्ध, धर्म और संघ का प्रतीक हैं।
- यह मुद्रा प्रथम ध्यानी बुद्ध वैरोचन द्वारा प्रदर्शित की गई है। माना जाता है कि वैरोचन अज्ञानता के भ्रम को वास्तविकता के ज्ञान में बदल देता है।

चित्र 1: धर्मचक्र मुद्रा

- भूमि स्पर्श मुद्रा
- शाब्दिक रूप से भूमि स्पर्श का अर्थ 'पृथ्वी को छूना' है। इसे आमतौर पर 'पृथ्वी गवाह' के रूप में जाना जाता है।
- यह मुद्रा, दाहिने हाथ की सभी पाँचों अंगुलियों से बनी है, जो जमीन को छूने के लिए फैली हुई है, बोधिवृक्ष के नीचे बुद्ध के ज्ञान का प्रतीक है, जब उन्होंने अपनी ज्ञान प्राप्ति की गवाही देने के लिए पृथ्वी देवी, स्थावरा को बुलाया था।
- इसी मुद्रा में शाक्य मुनि ने सत्य पर ध्यान करते हुए मारा की बाधाओं पर काबू पाया।
- दूसरी ध्यानी बुद्ध अक्षोभ्य कोई समुद्रा में दर्शाया गया है। ऐसा माना जाता है कि वह क्रोध के भ्रम को दर्पण जैसी बुद्धि में बदल देता है।

चित्र 2: भूमि स्पर्श मुद्रा

- वरदा मुद्रा।
- यह मुद्रा दान, करुणा और वरदान देने का प्रतीक है। यह मानव मुक्ति के लिए स्वयं को समर्पित करने की इच्छा की सिद्धि की मुद्रा है।
- इस मुद्रा में फैली पाँच उँगलियाँ निम्नलिखित पाँच सिद्धियों का प्रतीक हैं– उदारता, नैतिकता, धैर्य, प्रयास, ध्यान की एकाग्रता।
- इस मुद्रा का उपयोग शायद ही कभी अकेले किया जाता है, लेकिन आमतौर पर दाहिने हाथ से बनाई गई दूसरी मुद्रा के संयोजन में, अक्सर अभयमुद्रा।
- अभय और वरद मुद्रा के इस संयोजन को जापान में से गन से मुई– इन या योगन से मुई–इन कहा जाता है।
- ओरत्न संभव, तीसरे ध्यानी बुद्ध इस मुद्रा को प्रदर्शित करते हैं। उनके आध्यात्मिक मार्ग दर्शन में, अहंकार का भ्रम समानता का ज्ञान बन जाता है।

चित्र 3: बोधिसत्व वरदा मुद्रा बनाते हुए (पालकालकीमूर्ति)

- ध्यान मुद्रा
- ध्यान मुद्रा को एक या दोनों हाथों से बनाया जा सकता है
- जब एक हाथ से बनाया जाता है तो बायां हाथ गोद में रखा जाता है, जबकि दायां कहीं और लगाया जा सकता है। ऐसे मामलों में ध्यान मुद्रा बनानेवाला बायां हाथ महिलाओं के बाएं हाथ के ज्ञान के सिद्धांत का प्रतीक है।
- आनुष्ठानिक वस्तुएँ जैसे पाठ, या अधिक सामान्य रूप से त्याग का प्रतीक एक भिक्षा पात्र, इस बाएँ हाथ की खुली हथेली में रखा जा सकता है।
- ध्यान मुद्रा ध्यान की मुद्रा है, अच्छे कानून पर एकाग्रता की और आध्यात्मिक पूर्णता की प्राप्ति की मुद्रा है
- इस मुद्रा को चौथे ध्यानी बुद्ध अमिताभ द्वारा प्रदर्शित किया गया है, जिन्हें अमितायस के नाम से भी जाना जाता है। उनका ध्यान करने से आसक्ति का भ्रम विवेक का ज्ञान बन जाता है। ध्यान मुद्रा नश्वर लोगों को इस परिवर्तन को प्राप्त करने में मदद करती है।

चित्र 4: ध्यानमुद्रा

- अभयमुद्रा
- संस्कृत में अभय का अर्थ है निर्भयता। इस प्रकार यह मुद्रा सुरक्षा, शांति और भय को दूर करने का प्रतीक है।
- गांधार कला में, इस मुद्रा का प्रयोग कभी–कभी उपदेश की क्रिया को इंगित करने के लिए किया जाता था।
- अभय मुद्रा पाँचवी ध्यानी बुद्ध, अमोघ सिद्धि द्वारा प्रदर्शित की जाती है। वह बौद्ध देवताओं में कर्म के देवता भी हैं। अमोघ सिद्धि ईर्ष्या के भ्रम पर काबू पाने में मदद करती है।

चित्र 5: अभय मुद्रा में बुद्ध की प्रतिमा

## निष्कर्ष:

हालाँकि हमने विभिन्न धर्मों में इस्तेमाल की जानेवाली मुद्राओं के बीच समानता पाई ''ध्यानमुद्रा'' का उपयोग विभिन्न धर्मों में किया गया था। मुद्रा का अभ्यास मानव शरीर को प्रभावित करता है, जो शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक तीन उदात्तशक्तियाँ हैं। इसलिए मुद्राएँ धर्म में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। जैनधर्म में स्वामी महावीर जैन, बौद्धधर्म में बुद्ध और सिख धर्म में गुरुनानक देवजी को हमेशा गाय नया ध्यान मुद्रा में दिखाया गया है।

## संदर्भ:

1. ऐनीमारीशिमेल। 1993. संख्याओं का रहस्य, ओयूपी, एनवाई।
2. कुमार स्वामी आनंद। 1917. इशारों का दर्पण, हारवर्ड।
3. हिर्शीजी. 2000. मुद्राः योगाइनयोर हैंड्स, एनवाई।
4. केनोयर जेमार्क। 1998. प्राचीन सभ्यता, एड्स, ऑक्सफोर्ड प्रिंटिंग प्रेस कराची।
5. लॉरी–ओडेगार्ड, 2006। द गॉडेस एंड द गॉड एसिंथेसिस, कनाडा
6. मजहर–उल–हक। 1977। एशॉर्ट हिस्ट्री ऑफ इस्लाम, उर्दू बाजार, लाहौर।
7. रजनी कांत उपाध्याय। 2002. मुद्रा विज्ञान, भारत
8. स्टूली.1985। हिंदू आइकनोग्राफी, रूटलेज और केंगपॉल, लंदन।
9. ट्रेवरलिंस.1978। बौद्धधर्म का एक शब्दकोश, नई दिल्ली।
10. ज्वाल्फ, व्लाडेमेयर। 1966. ब्रिटिश संग्रहालय, लंदन में गांधार मूर्तिकला।
11. प्रदर्शनी की सिंधु सभ्यता सूची, 2001। मेट्रोपॉलिटन कला संग्रहालय, टोक्यो।